इकाई 40: रामधारी सिंह "दिनकर"

इकाई की रूपरेखा

40.0 उद्देश्य

40.1 प्रस्तावना

40.2 पृष्ठभूमि

40.3 राष्ट्रकवि दिनकर

- 40.3.1 कवि परिचय
- 40.3.2 रचनाएँ

40.4 दिनकर साहित्य : प्रमुख प्रवृत्तियाँ

- 40.4.1 राष्ट्रीय चेतना
- 40.4.2 सामाजिक चेतना
- 40.4.3 सांस्कृतिक चेतना

40.5 काव्य वाचन

- 40.5.1 रश्मिरथी
- 40.5.2 सामधेनी
- 40.5.3 हारे का हरिराम

40.6 सारांश

40.7 उपयोगी पुस्तकें

40.8 बोध प्रश्नों/अभ्यासों के उत्तर

40.0 उद्देश्य

इस इकाई में आप कविवर दिनकर का अध्ययन करेंगे। इकाई के अध्ययन के बाद आपः

- दिनकर के समय की पृष्ठभूमि का विश्लेषण कर सकेंगे,
- दिनकर के व्यक्तित्त्व और कृत्तिव के बारे में बता सकेंगे,
- दिनकर ने अपनी रचनाओं के माध्यम से देश को राष्ट्रीय एवं सामाजिक स्तर पर किस प्रकार नई राह दिखाई उसका विश्लेषण कर सकेंगे,
- उनकी महत्वपूर्ण कृति रश्मिरथी सामधेनी तथा हारे को हरिराम के कुछ अंश का वाचन कर सकेंगे।

40.1 प्रस्तावना

हिन्दी में ऐच्छिक पाठ्यक्रम 05 के अन्तर्गत खण्ड नौ में आप उन हिंदी कवियों का अध्ययन कर रहे हैं जिन्होंने राष्ट्रीय और सामाजिक क्षेत्र में देश को एक नए युग की ओर ले जाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। यह इकाई ऐसे ही एक राष्ट्रकवि पर है जिन्होंने अपनी लेखनी द्वारा राष्ट्र के नवनिर्माण में अथक प्रयास किया। समाज की सड़ी गली मान्यताओं से किस प्रकार राष्ट्र कमजोर होता है, किस प्रकार अलोकप्रिय मान्यताएँ व्यक्ति एवं राष्ट्र के विकास में बाधक होती हैं उसका यथार्थ रूप उनकी रचनाओं में देखने को मिलता है। रचनाकार अपने समय की परिस्थितियों से प्रभावित होता है। युग में घट रही घटनाएँ साहित्यकार

को प्रेरित करती हैं। दिनकर भी अपने समय में घट रही घटनाओं से प्रभावित हुए। ऐसा उन्होंने कई जगह स्वयं भी लिखा है। पाठ में हम ये देखेंगे कि किस प्रकार परिस्थितियों ने कवि को प्रभावित किया। दिनकर राष्ट्रकवि थे उनकी रचनाएँ जहाँ भारत की गौरव गाथा से भरी हुई हैं वहीं तत्कालीन जनता को प्रेरित भी करती थी, कवि देश की परिस्थितियों के अनुकूल रचना कर रहे थे। राष्ट्र की उन्नति के लिए जहाँ जरूरी था देश को परतंत्रता की बेड़ियों से मुक्त करना, वहीं दूसरी और अंधविश्वास एवं रूढ़ी से ग्रस्त भारतीय समाज को मुक्ति दिलाना भी था। हम पाठ में देखेंगे कि किस प्रकार दिनकर ने इन दो उद्देश्यों के लिए रचनाएँ की। उनका साहित्य विषय वस्तु एवं शिल्प विधान की दृष्टि से उत्कृष्ट है। शिल्प का प्रयोग भी उन्होंने अपने उद्देश्य के लिए किया है। भाषा, विषयवस्तु आदि पर चर्चा करके हम पायेंगे कि किस प्रकार कवि अपने उद्देश्यों मे सफल रहा है। रश्मिरथी को हमने वाचन के लिए रखा है। यह रचना हमें नयी दृष्टि देने में प्रेरक है। वाचन करते हुए हम उन तमाम पहलुओं पर विचार करेंगे कि किस प्रकार समाज को नयी दिशा देने के लिए कवि ने ऐसा महत्वपूर्ण काव्य रचा। व्याख्या द्वारा हम काव्य के शिल्पगत वैशिष्ट्यू को भी जानेंगे। आइए पहले उन परिस्थितियों का अवलोकन करें जिनमें दिनकर ने रचनाएँ की।

40.2 पृष्ठभूमि

राजनीतिक पृष्ठ भूमि में दिनकर का समय विश्व में उथल-पुथल का समय था। इस काल खण्ड में विश्व युद्ध भी हुए और कई परतंत्र देशों में क्रांतियाँ भी हुई। भारत में यह समय स्वतंत्रता आंदोलन का था। कांग्रेस के द्वारा जन आंदोलन तो चलाए जा रहा था लेकिन इसमें भी दो दल थे एक परंपरावादियों का और दूसरा प्रगतिशील लोगों का। जवाहरलाल नेहरू तथा सुभाष चंद्र बोस जैसे नेताओं के नेतृत्व में उत्तर भारत के युवक देश के लिए मर मिटने को तैयार हो गए थे। युवकों के क्रांतिकारी कार्यों से जहाँ जनता में जोश बढ़ता जा रहा था वहीं ब्रिटिश सरकार आंदोलन को कुचलने के लिए सख्ती से कार्य कर रही थी। गाँधी जी के आगमन से आंदोलन ग्राम-ग्राम तक फैलने लगा।

रौलटएक्ट-जलियाँवाला कांड से जहाँ देश में तूफान मच गया वहीं राष्ट्र एक सूत्र में बंध गया। भारतीय जनता विदेशी सत्ता के खिलाफ एकजुट होकर आंदोलन करने लगी। जलियाँवाला बाग कांड की जाँच के लिए जो हंटर-कमेटी नियुक्त हुई उसने निष्पक्ष निर्णय नहीं दिया फलतः देश में असंतोष फैल गया। कई जगह इस फैसले के विरोध में आंदोलन हुए, गाँधी जी राष्ट्रीय आंदोलन को समय-समय पर नया मोड़ देते रहे। असहयोग आंदोलन द्वारा विदेशी सत्ता का पाँव डगमगाने लगा। यह वह समय था जब देशबन्धु चितरंजन दास और मोतीलाल नेहरू ने स्वराज्य पार्टी के नींव डाली यह पार्टी काँग्रेस के नजदीक पड़ती थी कांग्रेस द्वारा सुनियोजित ढंग से आंदोलन चलाया जा रहा था। किन्तु अंग्रजों के अत्याचार के खिलाफ कुछ लोगों का रवैया अति उग्र था वे ईंट का जवाब पत्थर से देना चाहते थे, इसी का परिणाम था क्रांतिकारियों ने गुप्त दल का निर्माण किया। ये पूरे देश में फैल गए थे। भगत सिंह द्वारा असम्बेली में बम फैंकना आदि कई घटनाएँ हुई जिससे पता चलता है कि उस समय के भारतीय नवयुवक देश को परतंत्रता की बेड़ियों से मुक्त कराने के लिए जोखिम भरे कार्य करने से नहीं डरते थे।

साईमन कमीशन में एक भी भारतीय को नहीं शामिल करने से आंदोलन की आंच और तेज हो गई। 1930 में कांग्रेस ने स्वतंत्रता की घोषणा की और उसी वर्ष नमक सत्याग्रह भी किया गया। सरकार इन आंदोलनों को सख्ती से कुचलने के लिए कार्य करने लगी। भगत सिंह को फाँसी देकर सरकार ने सोचा कि भारतीय जनता डर जायेगी किंतु ऐसा हुआ नहीं। आंदोलन और तेज गति से चलने लगा। संस्थाओं पर प्रतिबंध, नेताओं को दूर काले पानी की सजा देकर अंग्रेजी सरकार ने अपने दमन की नीति को व्यापक रखा दूसरी ओर स्वतंत्रता के मतवाले और भी उत्साह से जुट गए। भारतीयों का संघर्ष 15 अगस्त 1947 को जा कर सफल रहा और देश स्वतंत्र हुआ। उसके बाद स्वतंत्र भारत का नव निर्माण करना था। अनेक कठिनाइयों के साथ चीन का भारत पर आक्रमण और अन्य राजनीतिक समस्याएँ थी। इस प्रकार दिनकर के रचना साहित्य की पृष्ठभूमि में भारत के राजनीतिक क्षेत्र में राष्ट्र की स्वतंत्रता के लिए संघर्ष, फिर राष्ट्र के नव-निर्माण के सामने समस्याएँ थीं। ऐसी ही परिस्थिति में कवि ने रचनाएँ की। हम आगे देखेंगे कि उनके साहित्य में किस प्रकार तत्कालीन परिस्थिति का प्रभाव पड़ा और किस प्रकार कवि से संघर्ष करता रहा। यह तो थी उनके समय की राजनीतिक परिस्थिति; अब दिनकर के समय में भारतीय समाज पर विचार करें।

सामाजिक परिस्थिति

भारतीय समाज का विभाजन अवैज्ञानिक ढंग से किया गया। जिसका परिणाम था असमानता का दिनोदिन विकास। जाति-वर्ण पर आधारित समाज में स्तर भेद को स्थान मिला। इस व्यवस्था को धर्म की मुहर लगा दी

गई। धर्म का भय पैदा किया गया। फलतः जनता का अंधविश्वास बढ़ता गया। इसी जाति व्यवस्था के द्वारा विभाजित भारतीय समाज को जोड़ने का प्रथम प्रयास गौतम बुद्ध द्वारा किया गया। किंतु वर्ण व्यवस्था एवं वर्ग विशेष में प्रभुत्व के कारण उनका कार्य विफल रहा। विदेशी जातियाँ देश में आती गईं और अपना-अपना साम्राज्य बनाती गईं। अंग्रजों का आगमन भी इसी क्रम में हुआ था। भारतीय समाज की कमजोरी का लाभ विदेशियों को मिलता रहा। दिनकर के समय का समाज भी कमावेश उसी पुरानी व्यवस्था के अनुरूप था। दलित एवं पीड़ित वर्ग के प्रति सहानूभूति दबे शब्दों में व्यक्त हो रही थी। किंतु समाज में दलित पीड़ित वर्ग उपेक्षित होता रहा। जन्म जन्म ही है व्यक्ति की महानता की कसौटी बन गई।

जन्म के कारण उत्तम गुणों वाले को भी अपनी क्षमता के विकास से वंचित होना पड़ा दूसरी ओर जनम की महानता का ढोंग रच कर अवगुणी व्यक्ति ऊँचे पद पर आसीन होते रहे। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद देश के संविधान के मुख्य निर्माता के रूप में डॉं भीमराव अम्बेडकर ने यह साबित कर दिया कि व्यक्ति का विकास तभी होगा जब उसके जन्म की जगह कर्म को महत्व दिया जायेगा एवं समान अवसर मिलेगा। दिनकर ने अपने समाज को गहराई से मापा था। और इसी संदर्भ में उन्होंने "रश्मिरथि" की रचना की। इस काव्य ग्रंथ की भूमिका में दिनकर लिखते हैं "मुझे इस बात का संतोष है कि अपने अध्ययन मनन से मैं व्यक्ति के चरित्र को जैसा समझ सका हूँ। वह इस काव्य के बहाने मैं अपने समय में जो कुछ कहना चाहता था उसके अवसर भी मुझे यहां स्थान मिल गये हैं" अपने समय की सामाजिक परिस्थितियों के संदर्भ में कवि का कहना है वर्ण चरित्र के उद्धार की चिंता इस बात का प्रमाण है कि हमारे समाज में मानवीय गुणों की पहचान बढ़ने वाली है, कुल जाति का अहंकार विदा हो रहा है। पाठ में जब हम प्रमुख प्रवृत्तियों की चर्चा करेंगे तो विस्तार से सामाजिक चेतना के विभिन्न क्षेत्रों को लेंगे।

आर्थिक पृष्ठभूमि

दिनकर का काल स्वतंत्रता संग्राम से लेकर स्वतंत्रता प्राप्ति से कुछ बाद तक का है। इन दिनों देश की आर्थिक स्थिति बहुत अच्छी नहीं थी। अंग्रजी शासन के शोषण की नीति से देश की आर्थिक दशा में गिरावट आती गई और यहाँ का उद्योग नष्ट प्राय हो गया था। राजनीतिक आंदोलन के समय भी दशा वैसी ही रही। सन् 1947 में स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद जब देश की बागडोर हमने अपने हाथों में ली तब देश की गिरी हुई आर्थिक दशा को सुधारने का प्रयास किया गया। किंतु सत्ता के नशे में चूर लोगों के कारण इसमें फर्क नहीं आया। देश के नव-निर्माण की रूपरेखा बनाई गई लेकिन देश की जनता निर्धन से निर्धनतर होती गई। संपन्न वर्ग संपन्न होता गया। कवि दिनकर ने इस कार्य की निंदा ही नहीं बल्कि कड़ा विरोध किया। हम आगे उनकी रचनाओं के माध्यम से जानेंगे कि किस प्रकार वे अपने ही लोगों द्वारा शोषण की नीति का विरोध करते हैं। सामंतवादी समाज की स्थापना के लिए उन्होंने हर जगह आक्रोश प्रकट किया। इस प्रकार हमने देखा कि कवि का समय सभी दृष्टियों से ऊथल-पुथल का काल था। भारत के इस कठिन काल में दिनकर ने अपनी लेखनी द्वारा नए एवं पीड़ा से मुक्त तथा सभी दृष्टि से आर्दश राष्ट्र के लिए प्रयत्न किया। आइए अब इस कवि की जीवनी के बारे में संक्षिप्त जानकारी प्राप्त करें--

40.3 राष्ट्रकवि दिनकर

भारतीय पुर्नजागरण के क्षेत्र में जिन कवियों ने योगदान दिया उनमें राष्ट्रकवि "दिनकर" का विशिष्ट स्थान है। यूँ तो उन्होंने पारंपरिक विषयों को आधार बनाकर काव्य रचनाएँ की किंतु उनमें स्पष्ट रूप से आज के युग की समस्याओं को ही लिया गया है। राष्ट्र परतंत्रता की बेड़ियों में जकड़ा हुआ था ऐसे में एक प्रबुद्ध कवि भला युग से कैसे मुँह मोड़ सकता था। दिनकर ने राष्ट्रीय एवं सामाजिक चेतना के लिए ही लेखन किया। नवजागरण के लिए उनके द्वारा लिखा गया साहित्य अत्यंत मूल्यवान है। आइए इस कवि के जीवन एवं साहित्यिक रचनाओं को जाने।

40.3.1 कवि परिचय

रामधारी सिंह दिनकर का जन्म 30 सितंबर सन् 1908 को बिहार के मुंगेर जिले के सिमरिया नामक ग्राम में हुआ था। उनका परिवार साधारण कृषक परिवार था। दिनकर जी जब दो वर्ष के थे तब उनके पिता का देहांत हो गया। माँ ने तीन बालकों को बहुत कठिनाई से पाला। सिमरिया ग्राम गंगा के किनारे स्थित है अतः बाढ़ आदि से उस ग्राम को हमेशा क्षति होती थी। ऐसे माहौल में दिनकर जी की प्रारंभिक शिक्षा शुरू हुई। ग्राम के कुछ दूर पर ही पाठ्शाला थी। बाद में उनका दाखिला मोकामा घाट के एक विद्यालय में करा दिया

गया जो लगभग छह मील दूर था। बालक दिनकर प्रतिदिन छह मील पैदल चलने के बाद स्टीमर लेते फिर विद्यालय पहुँचते थे। सन् 1928 में मैट्रिक की परीक्षा पास करने के बाद उच्च शिक्षा के लिए वे पटना आए। यहीं से उन्होंने इतिहास विषय में बी. ए. आनर्स किया सन् 1934 में वे बिहार सरकार के सब रजिस्ट्रार पद पर नियुक्त हुए। नौ वर्ष तक इस पद पर कार्य करते समय उन्होंने अपने राज्य की गरीबी का नजदीकी से अध्ययन किया। सन् 1950 में मुजफ्फरपुर के नंगट सिंह कालेज में हिंदी विभाग के अध्यक्ष पद को सम्भाला। सन् 1952 में वे राज्य सभा के सदस्य बनाए गए। 1964 में भागलपुर विश्वविद्यालय के उपकुलपति पद पर नियुक्त होने से पहले तक वे राज्य सभा के सदस्य रहे। सन् 1965 में भारत सरकार के हिन्दी सलाहाकार पद पर नियुक्त हुए। सन् 1959 में दिनकर को पदमभूषण से सम्मानित किया गया। 1960 में साहित्य अकादमी सन् 1962 में डीलिट तथा सन् 1973 में ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित किया गया। 24 अप्रैल सन् 1974 को मद्रास में उनका निधन हो गया।

40.3.2 रचनाएँ

दिनकर के अंदर साहित्य रचना की जन्मजात प्रतिभा थी। सन् 1924 में अपने विद्यार्थी जीवन से ही उन्होंने काव्य रचना शुरू कर दी थी। "छात्र सदोदर" में उनकी पहली काव्य रचना छपी थी। सन् 1935 से "रेणुका-काव्य संग्रह" के प्रकाशन से उनकी पुस्तकें छपने लगी थी। उन्होंने कुल 40 पुस्तकें लिखीं जो इस प्रकार से हैं।

काव्य

रेणुका, सामधेनी, कुरूक्षेत्र, चक्रवाल, रश्मिरथी, उवर्शी, कोयल और कवित्व, परशुराम की प्रतीक्षा, हारे को हरिराम, हुंकार,

वैचारिक गद्य

संस्कृति के चार अध्याय, शुद्ध कविता की खोज साहित्यमुखी, भारतीय एकता, राष्ट्रभाषा और राष्ट्रीय एकता, पंत, प्रसाद और मैथिलीशरण गुप्त।

विविध

संस्मरण और श्रद्धांजलियाँ, (संस्मरण)

दिन की डायरी

मेरी यात्राएँ

बोध प्रश्न 1

क) दिनकर का जन्म किस राज्य में और किस वर्ष हुआ ?

....

ख) उनके छात्र जीवन के समय अंग्रेजों ने किसे फांसी की सज़ा दी थी ?

....

....

ग) दिनकर को किन-किन पुरस्कारों से सम्मानित किया गया ?

....

....

घ) किस वर्ष उन्हें राज्य सभा का सदस्य बनाया गया और वे कब तक इस पद पर रहे ?

....

....

ङ) हिंदी से संबंधित किस पद पर भारत सरकार ने उन्हें नियुक्त किया ?

....

....

च) उनकी प्रथम काव्य रचना कब और किस पत्रिका में छपी ?

....

छ) उन्होंने कुल कितनी रचनाएं की ?

....

ज) उनकी संस्कृति और इतिहास विषयक प्रसिद्ध रचना का क्या नाम है ?

....

....

40.4 दिनकर साहित्यः प्रमुख प्रवृत्तियाँ

दिनकर का जन्म जिस युग में हुआ वह विश्वभर में एक परिवर्तन का युग था। सभी जगह उथल-पुथल मची हुई थी। नए युग का आगमन हो रहा था। सामन्ती व्यवस्था को तोड़कर समानता से भरे समाज के लिए संघर्ष हो रहा था। भारत में इसकी शुरूआत विदेशी सत्ता से मुक्ति के आंदोलन से होती है। भारतीय राजनीति में साम्यवाद का उदय होता है। समानता से पूर्ण समाज की स्थापना के लिए दिनकर जैसे कवि का भी उदय होता है। दिनकर के समस्त काव्य में हमें समसामयिक सामाजिक, राजनीतिक एवं सांस्कृतिक चेतना के दर्शन होते हैं। स्वयं दिनकर एक निर्भीक कवि थे। देश में अंग्रजों का राज्य था। दासता की बेड़ी से देश को मुक्त कराना था तो दूसरी ओर सड़ी-गली पुरानी व्यवस्था के नीचे दबे मानव को निकालना भी था। अपनी डायरी में स्वयं लिखते हैं कवि निर्भीक नहीं होंगे "हुंकार" रचना में कवि ने युग चेतना को ही व्यक्त किया है। एक उदाहरण देखिएः—

"समय-दुह की ओर सिसकते मेरे गीत विकल होय,
आज खोजने उन्हें बुलाने वर्तमान के पल आये ?
शैल-श्रृंग चढ़ समय-सिंधु के आर-पार तुम हेर रहे,
किन्तु तात क्या उन्हें, भूमि का कौन दनुज पथ घेरे रहे
दो वज्रों का घोष, विकट संघात घरा पर जारी है
बहिन-रेणु चुन स्वान सजा लो, दिटक रही चिनगारी है।
रण की घड़ी, जलन की बेला, रूधिर पंक में जान करो,
अपना साकल घरो कुण्ड में, कुछ तुम भी बलिदान करो—

दिनकर अपनी कविताओं के माध्यम से जनता में चेतना लाना चाहते थे। देश को गुलामी की जंज़ीर से मुक्त कराने के लिए लोगों में जोश लाना जरूरी था और दिनकर की कविताओं में ऐसे गुण भरे पड़ें है। आइए उनकी रचनाओं से उदाहरण लेकर हम उनमें व्यक्त राष्ट्रीय, सामाजिक एवं सांस्कृतिक चेतना की जानकारी प्राप्त करें:—

40.4.1 राष्ट्रीय चेतना

दिनकर की राष्ट्रीय चेतना का प्रारंभ "रेणुका" द्वारा होता है और "परशुराम की प्रतीक्षा" में उसका पूर्ण विकास होता है। युगीन अत्याचार अहंकार और आडंबर के नाश के लिए कवि कह उठता है—

"गिरे विभव का दर्प चूर्ण हो
लगे आग इस आडम्बर में,

अहंकार के उच्च शिखर से

स्वामहन अघड आग बुझा दो

जले पाप जग का क्षण भर में।

अंग्रेजों के अत्याचार से भारतीय जनता कराह रही थी इसलिए कवि का मानना था कि अहिंसक आंदोलन से कुछ नहीं होने वाला। और इसीलिए उन्होंने अपनी "हिमालय" शीर्षक कविता में शोर्य तथा शक्ति के लिए आह्वान किया।

"रे रोक युधिष्ठर को न यहाँ

जाने दे उनको स्वर्ग धीर

पर फिरा हमें गांडीव गदा

लौटा दे अर्जुन भीम वीर।

तू मौन त्याग, कर सिंहनाद

रे तपी आज तप का न काला

नव-युग शंख-ध्वनि कर जगा रही

तू जान, जान मेरे विशाल-"हूंकार"

दिनकर में राष्ट्रीयता कूट-कूट कर भरी हूई थी। लेकिन वे शांति अंहिसा को पूर्ण रूप से मानकर चलने के पक्ष में नहीं थे। उनका मानना था कि शांति और अहिंसा तभी सार्थक है जब उनका अनुयायी मजबूत हो अगर कोई शक्तिहीन राष्ट्र अहिंसा को अपनाता है तो इसका तात्पर्य यही हुआ कि वह कायर है। वे ईंट का जवाब पत्थर से देने के पक्षधर थे। स्वाधीनता प्राप्ति के बाद भारत के इतिहास की सबसे बड़ी घटना थी चीन का आक्रमण। इस समय कवि दिनकर ने तमाम भारत के बुद्धिजीवियों तथा कलाकारों को इस युद्ध का मुंहतोड़ जवाब देने के लिए आह्वान किया। वे मांग करते हैं कि अपनी मेघा शक्ति परशुराम्र के माध्यम से उन्होंने लोगों में राष्ट्रीय चेतना को उभाराः—

चिन्तकों! चिन्तना की तलवार गढ़ो रे।

ऋषियों! कृशान, उद्‌दीपन मन्त्र पढ़ो रे!

योगियों! जागो, जीवन की ओर बढ़ो रे!

बन्दूकों पर अपना आलोक पढ़ो रे!

है जहाँ कहीं भी तेन हमें पाना है,

रण में समग्र भारत को ले जाना है।

कवि परशुराम की मूर्ति का प्रतीत रखता है और एक नए भारत के उदय को दर्शाता हैः—

है एक हाथ में परशु, एक में कुश है,

आ रहा नये भारत का भाग्य पुरुष है।

गांधी की अहिंसक नीति से दिनकर का विचार अलग था। और इसीलिए वे "महामानव की खोज" शीर्षक कविता में गांधी नीति पर निर्भीकता पूर्वक प्रहार करते हैं।

"उब गया हूँ देख चतुदिर्क अपने

अजा धर्म का ग्लानि वहीन प्रवृतन

युग सतम सुबद्ध पुनः कहता है

ताप कलुष है। आशा बुझा दो मन की।

"हुंकार"

चरन के आक्रमण से राष्ट्रीयता आहट हुई थी। जीवन मूल्य भंग हुये थे अतः युग की मांग में अनुकूल अपने में दबे हुए आज को भड़क जाने दिया। कवि इतना तिलमिला उठा कि अहिंसा के बचाव के लिए हिंसा को प्रभार उढ़ता हैः—

"गिराओ बम गोली दागो

गांधी की रक्षा करने को गांधी से भागो।

"परशुराम की प्रतीक्षा" में कवि देशवासियों में राष्ट्र की रक्षा के लिए अपना सर्वस्व न्योछावर करने के लिए प्रोत्साहित करते हैंः—

दासत्व जहाँ है, वहीं स्तब्ध जीवन है,

स्वातन्त्रय निरन्तर समर, सनातन रण है,

स्वातन्त्रय समस्या नहीं आज या कल की जागृति तीव्र वह घड़ी-घड़ी पल-पल की कवि आगे यह कहता है

तिलक चढ़ा मत और हृदय में हूक दो,

दे सकते हो तो गोली बन्दूक दो।

युद्ध में पराजय से बड़ा कोई पाप नहीं इसलिए वे कहते हैं:

एक वस्तु है ग्राहय युद्ध में, और सभी कुछ देय है,

पुण्य हो कि पाप, जीत केवल दोनों का धेय है।

X X X X X

समर हारने से बढ़कर घातक न दूसरा पाप है।

इसी "परशुराम की प्रतीक्षा" में कवि ने उन लोगों का फटकारा है जो तटस्थ रहना चाहते हैं। कवि उन्हें चालाक तथा कायर कहता हैः—

अब समझा, चुप्पी, कदर्यता की वाणी है,

बहुत अधिक चातुर्य आपदाओं का घर है,

दोषी केवल वही नहीं, जो नयनहीन था,

उसका भी है पाप, आँख थी जिसे किंतु जो,

बड़ी, बड़ी घडियों में मौन, तटस्थ रहा है।

दिनकर ने काव्य रचना का प्रारंभ अपने विद्यार्थी जीवन से ही कर दिया था। उस समय भारत ब्रिटिश साम्राज्यवाद के अधीन था। जनता को जगाना तथा जुल्मकारी शासन के खिलाफ उन्हें आंदोलन के लिए तैयार करना उस समय के कवियों का पहला उद्देश्य था। दिनकर इसमें सबसे आगे थे। वे क्रांति को पुकारते हुए लिखते हैं—

"युगों से अनय का भार ढोते आ रहे हैं,

न बोली तू मगर हम रोज मिटते जा रहे हैं,

पिलाने को कहाँ से रक्त लायें दानवों को ?

नहीं क्या स्वत्व है प्रतिशोध का मन मानवों को।

"हुंकार-पृ.10

कवि जनताप को अमरीकी और फ्रांसीसी क्रांति का उदाहरण देकर लोगों को क्रांति के लिए प्रेरित करता है तथा अंग्रेजी सरकार को भी सावधान करता है कि जनता की ताकत को अनदेखा मत करोः—

"मत खेलो यों बेखबरी में

जन-समुद्र यह नहीं, सिंधु है, यह अमोध ज्वाला का

जिसमें पड़कर बड़े-बड़े कंगुरे पिघल चुके हैं।

लील चुका है यह समुद्र जाने कितने देशों में

राजाओं के मुकुट और सपने नेताओं के भी,

सावधान जन्मभूमि किसी की चारागाह नहीं है,

घास यहाँ की पहुँच पेट में काँटा बन जाती है।"

दिनकर मानव-मानव में असमानता को नहीं स्वीकारते चाहे शासक हो या शासित सभी को प्रगति का समान अवसर मिलना चाहिए। चाहे शासक देशी हो या विदेशी समानता का भाव रखना चाहिए और इसी नीति के अनुकूल शासन करना चाहिए।

कुरूक्षेत्र रचना में वे भीष्म से कहलवाते हैं:—

"धर्मराज! यह भूमि किसी की नहीं क्रीट है दासी,

है जन्मता समान परस्पर इसके सभी निवासी।

X X X X X

"राजतंत्र धोतक है नर की मलिन, विहीन प्रकृति का,

मानवता की ग्लानि और कुत्सित कलंक संस्कृति का।

कुरूक्षेत्र, पृ-51, 144

अन्यायी शासक के खिलाफ जब जनता एकजुट होकर उठ खड़ी होती है तो उसकी ताकत के आगे कोई नहीं टिक सकता:

"हुंकारों से महलों की नींव उखड़ जाती है

सांसों के बल से ताज हवा में उड़ता है,

जनता की रोके राह, समय में ताव कहाँ,

वह जिधर चाहते, काल उधर ही मुड़ता है।

जनता की शक्ति एकत्रित होकर काल का रूप धारण कर लेती है। इस प्रकार कवि ने विभिन्न उदाहरणों के माध्यम से लोगों में राष्ट्रीय चेतना फैलाने का सफल कार्य किया। आइए अब देखें कि तत्कालीन भारतीय समाज में व्याप्त असमानताओं को दूर करने के लिए उन्होंने क्या किया।

40.4.2 सामाजिक चेतनाः

भारतीय समाज का जिस दिन जन्म को आधार बना कर विभाजन हुआ उस दिन ये इसमें दुर्बलता आती गई उससे पहले का भारतीय समाज प्रगति की ओर अग्रसर था। बड़े-बड़े साम्राज्य की स्थापना किसी वर्ग विहीन समाज की ही देन हो सकती है न विखंडित समाज की वैज्ञानिक प्रगति ने विश्व को छोटा बना दिया है। अर्थात् आज अनगिनत ऐसे आविष्कार हो चुके हैं जिसमें भेद-भाव का कोई स्थान नहीं रहना चाहिए। पुराने रीति-रिवाजों का कोई स्थान नहीं ऐसे रीति रिवाज या अंधविश्वास जिनसे समाज विकसित न हो रहा हो, जिनमें मानवता कराह रही हो उसका नाश करना ही बुद्धिजीवियों का पहला कर्तव्य होना चाहिए। और इस कार्य को करने के लिए दिनकर जैसे महान् कवि पीछे नहीं हटते।

यही व्यवस्था भारतीय समाज के दुःख का सबसे बड़ा कारण है। उस पर प्रहार करते हुए कवि कह उठता है:—

"आह, सभ्यता के प्रांगण में आज गरल वर्षन कैसा

दीन दुखी असहाय जनो पर अत्याचार प्रबल कैसा ?

ब्राह्मण वर्ग में अनीति के विरूद्ध क्रांति का विगुल बजाने वाले महात्मा बुद्ध थे। रेणुका में "बोधिसत्व" रचना के माध्यम से कवि ने भारतीय समाज के कोढ़ अर्थात् जाति व्यवस्था पर कड़ा प्रहार किया है। अछुतोद्धार

आदि समस्या को इसमें लिया गया है। व्यक्ति का उज्जवल चरित्र ही सब कुछ है जाति का उसमें कोई स्थान नहीं:

"नर का गुण उज्जवल चरित्र है, नहीं वंश, धन'धाम"

"रश्मिरथी-पृ-6

कर्ण चरित्र के माध्यम से कवि ने अपनी रचना रश्मिरथी में प्रमाणित किया है कि जाति का व्यक्ति के चरित्र से कोई संबंध नहीं।

भाग्य आदि अंधविश्वासों से मानव का कल्याण नहीं होने वाला उसे तो कर्म पर विश्वास रखना चाहिए:—

"उद्यम से विधि का अंक उलट जाता है,

किस्मत का पासा पौरूष से हार पलट जाता है।

"समर शेष है" इसकी रचना कवि ने 1954 में की। इसमें उन्होंने समतामूलक समाज बनाने का आहवान किया है।

"सकल देश में हालाहल है

दिल्ली में हाला है।

दिल्ली में रोशनी, शेष,

भारत में अंधिपाला है।

समा शेष है-पृ-76

"सबार ऊपरे मानुष" यह विश्वकवि रवीन्द्रनाथ ठाकुर का मूल मंत्र था। इस वैज्ञानिक युग में भेद उपभेद, ऊंच-नीच, विवेक रहित मान्यताओं का कोई स्थान नहीं। विशेष रूप से भारत जैसे देश में जहाँ जातिव्यवस्था लोगों के नस-नस में समाई हुई है उसे दूर करना आवश्यक है। इन्हीं उद्देश्यों की पूर्ति के लिए दिनकर ने "रश्मिरथी" की रचना की है। यह वास्तव में युग की कुरूपा व्यथा गाथा है। कर्ण के चरित्र पर आधारित इस काव्य रचना के माध्यम से कवि ने आज जाति व्यवस्था जैसे भयंकर ज्वलत समस्या पर प्रहार किया है। कर्ण उन तमाम गुण संपन्न व्यक्तियों का प्रतीक है जो अमानवीय जाति व्यवस्था का शिकार हैं। वह तमाम उपेक्षित वर्ग का प्रतिनिधित्व कर रहा है।

मैं उनका आदर्श, जिन्हें कुल का गौरव ताड़ेगा,

नीच वंश जन्मा कह कर जिनको जग धिक्कारेगा।

जो समाज की विषम बहिन में चारों ओर जलेंगे,

पत्र-पत्र पर झेलते हुए बाधा निःसीमा चलेंगे।

"रश्मिरथी, पृ.60

कर्ण ललकारता है और चुनौती देता है:—

पूछो मेरी जाति, शक्ति हो तो मेरे भुजबल से,

रवि समान रोपित ललाट से, और कवच कुंडल से।

वर्ण व्यवस्था के संचालक कृपाचार्य बड़ी धूर्तता से कर्ण को अर्जुन से युद्ध की आज्ञा नहीं देते। कर्ण अपमानित होता है, किंतु दुर्योधन उसे अंग देश का राजा बना कर सम्मानित करता है। अर्जुन को रण में पराजित करने की मन ही मन प्रतिज्ञा करके कर्ण अपने लक्ष्य की पूर्ति के लिए आगे की योजना बनाता है। उसे पता है कि द्रोणाचार्य उसे शिक्षा नहीं देगा। वह जानता है कि उस युग के सबसे बड़े धनुर्धर "एकलव्य" का द्रोणाचार्य ने क्या हाल किया। अंगुठा कटवा कर उसे हमेशा के लिए पंगु बना दिया। अतः छल से वह परशुराम का शिष्य बनता है। अपने को ब्राह्मण पुत्र बता कर ही वह ऐसा कर पाता है किंतु उसकी आत्मगलानि द्वारा कवि ने उस तमाम उपेक्षित वर्ग की व्यथा ही व्यक्त की है जिसके पास सामर्थ्य तो है किंतु जाति व्यवस्था के कारण वे अपना सामर्थ्य दिखाने में विवश हैं:—

हाय कर्ण तू क्यों जनमा था ? जनमा तो क्यों वीर हुआ

कवच और कुंडल भूषित भी तेरा अघम शरीर हुआ।

आगे कवि ऐसे विषमता मूलक समाज पर व्यंग्य करता है और कहता है।

धँस जाए वह देश अतल में, गुण की जहाँ नहीं पहचान

जाति गोत्र के बल से ही आदर पाते है जहाँ सुजान।

कुरूक्षेत्र पृ-15

आगे की पंक्तियों में पूरे भारतीय समाज के सामने एक प्रश्नचिन्ह रखा जाता है:"

कौन जन्म लेता किस कुल में आकस्मिक ही है यह बात,

छोटे कुल पर, किंतु, यहाँ होते तब भी कितने आधात!

हाय, जाति छोटी है, तो फिर सभी हमारे गुण छोटे,

जाति बड़ी-तो बड़ें बने वे, रहे लाख चाहे छोटे।

कुरूक्षेत्र-पृ-15

कुरूक्षेत्र में ही दिनकर ने यह स्पष्ट रूप से लिखा है कि जाति, धर्म, वंश से किसी व्यक्ति के गुण को मापा नहीं जा सकता। व्यक्ति का व्यक्तित्त्व स्वयं ही निखरता है। चाहे झोपड़ी हो या महल कहीं भी गुण सम्पन्न व्यक्ति हो सकता है, इसीं तरह किसी भी जाति का व्यक्ति हो उसमें अच्छे गुण भी हो सकते हैं और बुरे भी। इसलिए जाति वर्ग की कोई सार्थकता नहीं:—

नहीं फूलते कुसुम मात्र राजाओं के उपवन में,

अमित बार खिलते वे पुर से दूर कुंज कानन में

समझे कौन रहस्य ? प्रकृति का, बड़ा अनोखा हाल,

गुदड़ी में रखती चुन-चुनकर बड़े कीमती लाल।

कुरूक्षेत्र, पृ-2

40.4.3 सांस्कृतिक चेतनाः

दिनकर अपने जीवन के तैंतालीस वर्षों तक लगातार साहित्य रचना करते रहे। पद्य और गद्य के माध्यम से उन्होंने राजनीतिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक चेतना को फैलाने का सफल कार्य किया। उनका मानना था कि साहित्य मानव के लिए उपयोगी होना चाहिए। मात्र मनोंरजन या मन को आनंद प्रदान करने वाला साहित्य साहित्य नहीं, साहित्य वही है जो मनुष्य के दिलो-दिमाग को प्रभावित करे और व्यक्ति कुछ अच्छा करने के लिए प्रयत्नशील हो जाए। हमने देखा कि किस प्रकार राष्ट्रीय आंदोलन के समय से लेकर स्वतंत्रता प्राप्ति और चीनी आक्रमण के समय समयानुकूल साहित्य रच कर कवि ने भारतीय को राह दिखाई। वही भारतीय समाज में व्याप्त बुराइयों को दूर करने का प्रयास किया। तब हम विचार करेंगें कि उन्होंने भारत में किस प्रकार सांस्कृतिक चेतना जगाई। दिनकर को अपनी भारतीय संस्कृति पर गर्व था। लेकिन केवल अतीत की घटनाओं का स्मरण कर ही वे नहीं रुकने वाले थे। अतीत की घटनाओं का उदाहरण देकर वर्तमान समय में समाजोयोगी कार्य के लिए उन्होंने काव्य के माध्यम से भारतीय जनता के सामने कई प्रश्न रखे। उन्होंने यह प्रश्न रखा कि क्या केवल जाति वंश के आधार पर ही व्यक्ति को प्रगति का अवसर दिया जायेगा। क्या परंपरा को अपना कर ही राष्ट्र की उन्नति संभव है। क्या भारतीय जनता को प्रगति का समान अवसर नहीं दिया जायेगा। उन्होंने यह भी प्रश्न रखा कि इस वैज्ञानिक युग को हमें परिचय से नहीं सीखना होगा? इत्यादि सन् 1976 में बरेली कालेज के तेरहवें दीक्षान्त समारोह में दिये गए भाषण का कुछ अंश यहाँ दिया जा रहा है जिससे आप स्वयं अनुमान लगा सकते हैं कि वे किस प्रकार की सांस्कृतिक चेतना चाहते थे:—

"पश्चिम के समस्त देशों में आधुनिकता अपने संघर्ष में जीती है और प्राचीनता पराजित हुई है। भारत में यह संघर्ष चल रहा है। भारत भी नवीनता को प्राप्त कर बदलता रहा है, पर इसकी विचित्रता यह है कि यह जितना ही बदलता है अपने आत्म स्वरूप के अधिक निकट पहुँचता है। यही विलक्षणता भारत का अपना गुण

है और इसी गुण के कारण भारत के लोग यह आशा लगाये बैठे हैं कि आधुनिकता को अपना लेने के बाद भी भारत, भारत रहेगा और संसार के सामने एक नया नमूना पेश करेगा।

दिनकर अपने देश के उस पुराने मूल्यों को भी नहीं छोड़ना चाहते जिनसे मानवता का विकास होता है। किंतु उन घिसेपिटे अंधविश्वास को अवश्य ही त्यागने की बात कहते हैं, जो मानवता के विकास में बाधक है। भारत के सांस्कृतिक रूप का सुंदर उदाहरण हमें उनकी रचना नीलकुसुम, "किसको नमन करूं में देखने को मिलता है:—

"भारत नहीं स्थान का वाचक, गुण विशेष कर का है,

एक देश का नहीं, शील यह भूमण्डल" भर का है।

जहाँ कहीं एकता अखंडित, जहाँ प्रेम का स्वर है,

देश-देश में वहाँ खड़ा भारत जीवित भास्कर है।

दिनकर "सवार उपरे मानुष" में विश्वास रखते थे। वे बुद्ध के मूल मंत्र को सर्वश्रेष्ठ मानते थे। संसार को बुद्ध का दिया गया संदेश था मानवता के कल्याण में जुट जाओ। इसी को कवि ने निम्नलिखित पंक्तियों में पिरोया है:—

"श्रेय वह विज्ञान का वरदान,

हो सुलभ सबको सहज जिसका रुचिर अवदान।

श्रेय वह नर-बुद्धि का शिव-रूप अविष्कार,

ढो सके जिसके प्रकृति सबके सुखों का भार।

मनुज के श्रम के अपव्यय की प्रथा रुक जाए,

सुख समृद्धि विधान में नर के प्रवृति झुक जाय।

बोध प्रश्न 2

क) दिनकर की किस रचना में राष्ट्रीयता का प्रांरभ होता है ?

....

....

ख) "परशुराम की प्रतीक्षा" की रचना किस उद्देश्य से की गई ?

....

....

ग) "हिमालय" शीर्षक कविता में कवि दिनकर का क्या संदेश है ?

....

....

घ) गांधी के अहिंसक विचार से क्या दिनकर सहमत थे ?

....

....

ङ) गांधी की रक्षा के लिए गांधी से भागने की सलाह कवि ने क्यों दी ?

....

....

....

च) तटस्थ लोगों के प्रति दिनकर का क्या विचार था ?

....

....

छ) अमरीकी तथा फ्रांसीसी क्रांति का उदाहरण देकर कवि क्या संदेश देना चाहता है ?

....

....

अभ्यास 1

दिनकर की सामाजिक चेतना को दस बारह पंक्तियों में स्पष्ट कीजिए।

....

....

....

....

....

....

....

....

40.5 काव्य वाचन

40.5.1 रश्मिरथी

नहीं फूलते कुसुम मात्र राजाओं के उपवन में,
अमित बार खिलते वे पुर से दूर कुंज कानन में।
समझे कौन रहस्य ? प्रकृति का बड़ा अनोखा हाल,
गुदड़ी में रखती चुन-चुन कर बड़े कीमती लाल।

रश्मिरथी

x x x x x x

हाय कर्ण तू क्यों जनमा था ? जनमा तो क्यों वीर हुआ ?
कवच और कुंडल भूषित भी तेरा अधम शरीर हुआ।
धँस जाए वह देश अतल में, गुण की जहाँ नहीं पहचान
जाति गोत्र के बल ये ही आदर पाते है जहाँ सुजान।

x x x x x x

कौन जन्म लेता किस कुल में आकस्मिक ही है यह बात
छोटे कुल पर, किन्तु, यहाँ होते तब कितने आघात्।

हाय! जाति छोटी है, तो फिर सभी हमारे गुण छोटे,
जाति बड़ी, तो बड़े बने वे,रहे लाख चाहे छोटे।

x x x x x x

परशुराम के चरण धूलि लेकर,
उन्हें अपने हृदय की भक्ति देकर,
निराश से विकल, टूटा हुआ सा,
किसी गिरी श्रृंग से छुटा हुआ सा,
चला खोया हुआ सा कर्ण मन में
कि जैसे चाँद चलता हो गगन में!

x x x x x x

पूछो मेरी जाति, शक्ति हो तो, मेरे भुजबल से,
रवि समान दोषित ललाट से, और कवच कुंडल से।
पढ़ा उसे जो झलक रहा है मुझमें तेज प्रकाश,
मेरे रोम रोम में अंकित है मेरा इतिहास।

x x x x x x

40.5.2 सामधेनी

अपनी हड्डी की मशाल से हृदय चीरते तम का,
सारी रात चले तुम दुख झेलते कुलिश निर्मम का,
एक खेय है शेष किसी विधि पार उसे कर जाओ,
वह देखों, उस पार चमकता है मन्दिर प्रियतम का।
आकर इतना पास फिर वह सच्चा रस नहीं है।
थक कर बैठ गए क्या, भाई मंजिल दूर नहीं है।

x x x x x x

उन्नत सिर पर हो जब तक शम्पा का प्रहार,
सोओ तब तक जा स्वत्यमान मेरे विचार।
तब भी आशा मत मरे .... करे पीयूष पान,
वह जिये सोच, मेरा प्रयास, कितने महान्!

x x x x x x

आगे पहाड़ को पा, धारा रुकी हुई है,
बलपुंज केसरी की, ग्रीवा झुकी हुई है,

अग्निस्वलिंग रज का, बुझ ढेर हो रहा है,
है रो रही जवानी, अन्धेरा हो रहा है।

x x x x x x

एक देश है जहाँ विषमता से अच्छी हो रही गुलामी,
जहाँ मनुज पहले स्वतन्त्रता से हो रहा साम्य का कामी।
भ्रमित ज्ञान से जहाँ जाँच हो रही दीष्ट स्वातन्त्रय समर की,
जहाँ मनुज है पूज रहा रज को विचार सुध अपने घर की।

x x x x x x

जहाँ सुधा सम्बन्ध विश्वमानवता से नर जोड़ रहा है,
जन्मभूमि का भाज्य जगत की नीतिशिला पर फोड़ रहा है।
चिल्लाते हैं "विश्व विश्व" कह जहाँ चतुर नर ज्ञानी,
बुद्धि भीरू सकते न डाल जलते स्वदेश पर पानी।
जहाँ मास्को के रणधीरों के गुण गाये जाते,
दिल्ली के रूधिर राक्त वीर को देख लोग सकुचाते

40.5.3 हारे का हरिराम

"सबसे जरूरी काम"
वैसे तो सब कुछ जरूरी है।
मगर सबसे जरूरी बातें क्या है!
स्वच्छ शासन
और धूस नहीं खाने वाला तंत्र,
बड़े नहीं, छोटे-छोटे यंत्र,
शिक्षा उन्नति
और खेती का चाव,
जो कुछ उपजे, उसे
बाँट कर खाने का भाव।
राष्ट्र का एक अंग दुबला
और दूसरा छोटा न रहे।
अमीर बनने के लोभ में
कर्ज खाना बंद हो।
धन के लिए अमरीका
और यश के लिए रूस जाना बन्द हो
बहुत कठोर होना अच्छा नहीं

मगर कोमल होना भी तो बुरा है।

देखते नहीं,

पड़ोसी के हाथ में छुरा है ?

प्रेम और अहिंसा काफी नहीं है।

उनकी रक्षा के लिए

बाँहों में बल भी चाहिए।

मिट्टी, पानी, हवा और आसमान से

आदमी नहीं बनता।

उसके निर्माण में थोड़ा अनल भी चाहिए।

40.6 सारांश

दिनकर का समय स्वतंत्रता संग्राम से लेकर प्राप्ति का है। कवि ने स्वतंत्रता संग्राम के दिनों में अपनी रचनाओं के माध्यम से चेतना फैलाने का कार्य किया। चीनी आक्रमण के समय भी उन्होंने लोगों में उत्साह शक्ति संचरित करने का कार्य किया आप दिनकर के समय राजनीतिक सामाजिक आदि स्थितियों के बारे में बता सकते हैं।

- एक गरीब किसान परिवार में जन्म लेने के बावजूद वे अपनी मेहनत एवं मेधा शक्ति के बल पर देश की संसद तक पहुँचे। आप उनकी जीवनी के बारे में बता सकते हैं।
- कुरूक्षेत्र, सामधेनी, रश्मि रथी, संस्कृति के चार अध्याय आदि महत्वपूर्ण ग्रंथ के रचनाकर उन्होंने भारतीय संस्कृति को समयानुकूल ढालने का प्रयास किया। माप उनकी कृत्यों के महत्व को बता सकती है।

40.7 उपयोगी पुस्तकें

डॉ. पन्ना, दिनकर के काव्य में युग चेतना, उषा पब्लिसिंग हाउस जयपुर-जोधपुर

डॉ. पुष्पा ठक्कर, दिनकर-काव्य में युग चेतना, अरविन्द प्रकाशन बम्बई

सम्पादक डॉ. गोपालराय-डॉ सकलदेव शर्मा, राष्ट्रकवि दिनकर, ग्रन्थ निकेतन पटना

डॉ सावित्रि सिन्हा, दिनकर, राजपाल एण्ड संस दिल्ली।

40.8 बोध प्रश्नों/अभ्यासों के उत्तर

बोध प्रश्न 1, देंखे भाग 40.3,

बोध प्रश्न 2 देंखे भाग 40.4

अभ्यास 1 देंखे भाग 40.4